SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सम्प्रेषण आधारित राष्ट्रीय आंदोलनों में जनजाति क्षेत्रों के सेनानियों का व्यक्तिक अध्ययन (महात्मा गाँधी के आंदोलन – कांकेर, भानुप्रतापपुर और दुर्गूकोंदल के संदर्भ में)

कुमार सिंह तोप्पा, शोधार्थी, जनसंचार विभाग,
शाहिद अली, (Ph.D.) जनसंचार विभाग,
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
कुमार सिंह तोप्पा, शोधार्थी, जनसंचार विभाग,
शाहिद अली, (Ph.D.) जनसंचार विभाग,
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 13/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 20/10/2020
Plagiarism : 01% on 13/10/2020

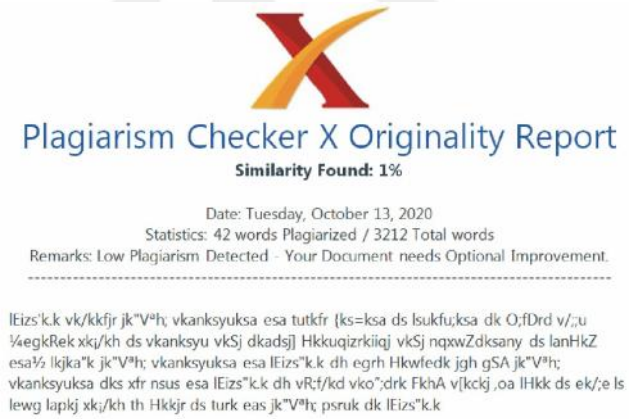
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, October 13, 2020
Statistics: 42 words Plagiarized / 3212 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

lEizs'k.k vk/kkfjr jk"V³h; vkanksyuksa esa tutkfr {ks=ksa ds lsukfu;ksa dk O;fDrd v/;;u ¼egkRek xk¡/kh ds vkanksyu vkSj dkadsj] Hkkuqizrkiiqj vkSj nqxwZdksany ds lanHkZ esa½ lkjka"k jk"V³h; vkanksyuksa esa lEizs"k.k dh egrh Hkwfedk jgh gSA jk"V³h; vkanksyuksa dks xfr nsus esa lEizs"k.k dh vR;f/kd vko";drk FkhA v[kdkj ,oa lHkk ds ek/;e ls lewg lapkj xk¡/kh th Hkkkjr ds turk eas jk"V³h; psruk dk lEizs"k.k

शोध सार

राष्ट्रीय आंदोलनों में सम्प्रेषण की महती भूमिका रही है। राष्ट्रीय आंदोलनों को गति देने में सम्प्रेषण की अत्यधिक आवश्यकता थी। अखबार एवं सभा के माध्यम से समूह संचार गाँधी जी भारत के जनता में राष्ट्रीय चेतना का सम्प्रेषण करते थे। गाँधी जी भारत के अनेक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करने के साथ अपने अखबारों में राष्ट्रीयता, एकता भाई–चारा प्रेम, सत्य, अहिंसा और समरसता का सम्प्रेषण करते रहे। महात्मा गाँधी को भारत मे ही नहीं वरन् विदेशों में भी राष्ट्रपिता और बापू कहा जाता है। वे भारत की आजादी में राष्ट्रीय आंदोलनकर्ता, देशभक्त, अधिवक्ता, पत्रकार, आमजनता के मसीहा, सामाजिक चिंतक, सामाजिक कार्यकर्ता जैसे अनेक भूमिकाओं में रहे। देशवासियों में अहिंसा, प्रेम और एकता का सम्प्रेषण करने वाला उत्कृष्ट सम्प्रेषक, महान पत्रकार, मार्गदर्शक, सर्वश्रेष्ठ लेखक थे। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी जी की भूमिका रही है। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, स्वराज्य आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, किसान आंदोलन, जल सत्याग्रह, जैसे अनेक राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी जी की अग्रणी भूमिका रही है। गाँधी जी के बताये मार्ग पर चलने वाले अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का भी राष्ट्रीय आंदोलन में उत्कृष्ट योगदान रहा है। गाँधी जी के विचारों एवं बातों को देश के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने क्षेत्र में आम जनता के मध्य सम्प्रेषित करते थे। राष्ट्रीय चेतना का संचार करते हुए भारत की आजादी के लिए लोगों को जागृत और प्रेरित करते थे। आज ऐसे अनेक शहीदों एवं देशभक्तों को स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा प्राप्त है, वरन् राष्ट्रीय आंदोलनकर्ताओं में कुछ स्वतंत्रता सेनानियों को दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। भानुप्रतापपुर और दुर्गूकोंदल क्षेत्र के क्रांतिकारियों और

आंदोलनकारियों में सुखदेव पातर (पात्र), कंगलू कुम्हार, इंदरू केंवट, डोंगिया ठाकुर गोंड, तहंगू गोंड, दारसू गोंड, घस्सू गोंड हैं। इस क्षेत्र के 7 क्रांतिकारियों और सत्याग्रहियों में से इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार को ही स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा प्राप्त हैं। 5 सत्याग्रहियों सुखदेव पातर, डोंगिया ठाकुर गोंड, तहंगू गोंड, दारसू गोंड, घस्सू गोंड को अब तक स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ हैं। दुर्गूकोंदल और भानुप्रतापपुर क्षेत्र में महात्मा गाँधी जी के राष्ट्रीय आंदोलनों के संदेशों को आमजनता तक सम्प्रेषण करने का कार्य सुखदेव पातर (पात्र), कंगलू कुम्हार, इंदरू केंवट, डोंगिया ठाकुर गोंड, तहंगू गोंड, दारसू गोंड, घस्सू गोंड करते थे। कांकेर, भानुप्रतापपुर, दुर्गूकोन्दल और कोड़ेकुर्से क्षेत्र में राष्ट्रीय आंदोलन के संदशों का प्रचार–प्रसार करते थे। प्रस्तुत शोध आलेख में इसी पक्षों पर अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

महात्मा गाँधी, भाई–चारा, आंदोलन, स्वतंत्रता सेनानी, संप्रेषण।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित विभिन्न संदेषों को ब्रिटिश सरकार के जासूसों एवं अधिकारी, कर्मचारियों से छूप–छूपकर जनसम्पर्क करते थे। महात्मा गाँधी जी के संदेशों को जन–जन तक प्रचार–प्रसार करते, गाँव–गाँव में जा कर लोगों से मुलाकात करते और सभा कर राष्ट्रीय आंदोलनों के बारे में लोगों को सम्प्रेषण करते थे। इस दौरान अखबारों की पहुँच इस क्षेत्र में नहीं थी। सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार एवं इनके अन्य साथियों ने सभा, रैली, जुलूस इत्यादि के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े विचारों, बातों संदेशों का प्रचार–प्रसार करते थे। दुर्गूकोंदल, भानुप्रतापपुर, कोड़ेकुर्से क्षेत्र में गाँधी जी के राष्ट्रीय आंदोलन का व्यापक प्रचार–प्रसार किया। महात्मा गाँधी जी के राष्ट्रीय आंदोलन सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, स्वराज्य आंदोलन का नेतृत्व सुखदेव पातर (हल्बा), इन्दरू केंवट, कंगलू कुम्हार एवं इनके अन्य साथियों ने किया। सुखदेव पातर (हल्बा), इन्दरू केवट, कंगलू कुम्हार एवं इनके अन्य साथियों ने यहाँ पर आदिवासियों को राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति जागरूक किया। गाँव–गाँव जाकर आदिवासियों एवं सम्पूर्ण समाज में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। सभा, बैठक, रैली और जुलूस तथा भाषणों के द्वारा जन–जन तक राष्ट्रीय आंदोलन की खबरें और सूचनाएं सम्प्रेषित की जाती थी। राऊरवाही के पातर बगीचा और खण्डीघाट के राजादाब में सभा और बैठक होती थी। फलस्वरूप सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और क्षेत्र की जनता राश्ट्रीय आंदोलनों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिये।

महात्मा गाँधी जी के समाचारपत्र

गाँधी जी के इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन महत्वपूर्ण समाचार पत्रों में से थे। उन्होंने हरिजन अंग्रेजी भाषा में तथा हरिजन सेवक हिन्दी और हरिजनबन्धु गुजराती में प्रकाशित किया। इसके अलावा भारत से प्रकाशित अखबारों में विभिन्न विषयों पर लिखते रहे। गाँधी जी के समाचारपत्रों में महापुरूषों की जीवनियाँ, अन्याय से संबंधित कृत्यों पर विशेष टीका–टिप्पणियाँ होती थी। गाँजी के अखबारों में सत्य, अहिंसा, समरसता से संबंधित समाचार प्रकाशित होते थे। इन अखबारों का मूलाधार राष्ट्रीयता थी। इस प्रकार गाँधीजी अखबारों के माध्यम से देश की जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत करते थे।

दुर्गूकोन्दल और भानुप्रतापपुर क्षेत्र के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी

दुर्गूकोंदल विकासखण्ड में 7 गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों में सुखदेव पातर (हल्बा) ग्राम–राऊरवाही और भेलवापानी, कंगलू कुम्हार ग्राम–चमेल और गोटुलमुण्डा, इंदरू केंवट ग्राम–सुरूंगदोह, डोगिंया ठाकुर गोंड ग्राम–दरगढ़, तहंगू गोंड ग्राम–पालवी, दारसू गोंड ग्राम–हेपुरकसा, घस्सू गोंड ग्राम–चेमल है। इनमें से स्व. सुखदेव पातर (हल्बा), स्व. कंगलू कुम्हार, इंदरू केंवट मुख्य भूमिका में थे। इनके जोशीले अगुवाई एवं मार्गदर्शन में

गाँव–गाँव जाकर आदिवासियो ंको भारत की आजादी के लिए राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए सम्प्रेषण के परंपरागत माध्यमों का भरपूर उपयोग किया गया।

सभा स्थल पातर बगीचा और आमा झण्डा

छत्तीसगढ़, कांकेर जिले के दुर्गूकोंदल विकासखण्ड में स्थित राउरवाही ग्राम में पातर बगीचा है, यह वहीं गाँव है जहाँ पर सुखदेव पातर (हल्बा) भारत की आजादी, राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सभाएं करते थे। पातर बगीचा सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार जी का सभा स्थल है। वे तीनों इस बगीचा में आम पेड़ के नीचे बैठक कर राष्ट्रीय आंदोलन को सफल बनाने के लिए रूपरेखा तैयार करते थे। इस बगीचा में आम के पेड़ अधिक है। एक आम पेड़ में चरखा युक्त तिरंगा झण्डा बाँध कर सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार द्वारा पूजा किया गया तत्पश्चात् वे गाँव–गाँव जाकर लोगों को महात्मा गाँधी जी के बातों एवं विचारों को बताते थे। आम नागरिकों में सूचना सम्प्रेषण का कार्य करते थे, तभी से गाँव में स्थित इस आम के पेड़ को झण्डा आमा के नाम से जाना जाता है।

सभा व बैठक हेतु सुरक्षित स्थान पातर बगीचा

राऊरवाही गाँवों के बीच में बसा हुआ है, इनके चारों तरफ गाँव बसे हुए हैं। पातर बगीचा में कभी भी बैठक और सभा होती थी तो इस क्षेत्र की जनता तक आसानी से पहुँच सकती थी। राऊरवाही गाँवों के बीच होने के कारण पातर बगीचा में ब्रिटिश सरकार के अधिकारी, कर्मचारी और मुखबीर नहीं पहुँच पाते थे। अंग्रेज सरकार के सिपाहियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और मुखबीरों की थोड़ी–सी भी हलचल का पता चलता था, तो गाँव वाले अतिशीघ्र पातर बगीचा पहुँचकर सुखदेव पातर (हल्बा) को अंग्रेज सरकार के नौकरों के आने की सूचना देते थे। इसके बाद सुखदेव पातर और उनके साथी इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार एवं आम जनता अपने–अपने स्थानों की ओर प्रस्थान करते थे। इस कारण से पातर बगीचा सभा और बैठक करने के लिए सबसे उपयुक्त और सुरक्षित ठिकाना बना, जनसमुदाय के अधिक संख्या पर सूचनाएँ सम्प्रेषित करने के कारण इस जगह का विशेष महत्व है।

सभा स्थल खण्डीघाट का राजादाब

सुखदेव पातर (हल्बा) राष्ट्रीय आंदोलन की दारौन ही राऊरवाही से ग्राम भेलवापानी में बस गये और वहीं से भारत की आजादी की लड़ाई में अतुलनीय योगदान दिया। आज भी भेलवापानी और आसपास के गाँव के लोग सुखदेव पातर (हल्बा) के वीरगाथाओं को भूले नहीं हैं। इससे मौखिक संचार के माध्यम की अटूट परंपरा को आज भी देखा जा सकता है। दुर्गूकोंदल विकासखण्ड के गाँव चेमल और भेलवापानी गाँव के किनारे से खण्डी नदी प्रवाहित होती है। इस नदी के किनारे प्रकृति की खूबसूरत पेड़–पौधे और चट्टान अवस्थित है। खण्डी नदी के खण्डीघाट तट पर एक राजादाब नामक स्थल है। खण्डीघाट का राजादाब पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ है। इस कारण से इस स्थान पर अंग्रेज सरकार के सिपाहियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और मुखबीरों का पहुँचना सभंव नहीं था। खण्डीघाट का राजादाब सुखदेव पातर ग्राम भेलवापानी, कंगलू कुम्हार ग्राम–चेमल के समीप दोनों गाँव के बीच में है तथा इंदरू केंवट का गाँव सुरूंगदोह बहुत नजदीक है। इस वजह से भी इन तीनों के लिए खण्डीघाट का राजादाब सभा व बैठक करने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान होता था। यहाँ पर भारत देश के आजादी के दीवाने सुखदेव पातर, इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार जनसभाएं करते थे। इस सभा स्थल से स्वतंत्रता सेनानी इंदरू केंवट की ओजस्वी, क्रांतिकारी आवाज भारतमाता की जय, महात्मा गाँधी की जय की गूँज आसपास के गाँव चेमल, भेलवापानी, आमागढ़ तक सुनाई देती थी। समूह संचार का उपयोग सूचना सम्प्रषित करने के लिए ज्यादा किया गया। यह वह स्थल है, जहाँ पर बैठक कर ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों, अन्याय, शोषण के विरूद्ध आंदोलन करने के लिए रणनीति बनाते थे। इस स्थल पर सभा कर के रैली, जुलूस निकालने की तारीख और योजना बनाते थे तथा योजनाबद्ध तरीके से कांकेर, भानुप्रतापपपुर, दुर्गूकोंदल, कोड़ेकुर्से एवं गाँव–गाँव जाकर ब्रिटिश सरकार के दमनकारी नीतियों एवं अन्याय, शोषण के खिलाफ रैली, जुलूस और सभा के माध्यम से लोगों

को ब्रिटिश सरकार के आदेश, बेगारी जैसे अनेक कार्यों को नहीं मानने के लिए संचार के विभिन्न परंपरागत माध्यम की उपस्थिति से आंदोलन के प्रति लोगों को जागरूक किया जाता था।

छत्तीसगढ़ में महात्मा गाँधी जी का आगमन और सुखदेव पातर, इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार धमतरी का कंडेल सत्याग्रह

सन् 1920 में गाँधी जी का छत्तीसगढ़ में प्रथम आगमन हुआ। महात्मा गाँधी जी छत्तीसगढ़ में कंडेल जल सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व करने पहुँचे। गाँधी जी के सम्प्रेषण की क्षमता इतनी अधिक थी कि दूर–दूर तक उनके आने का संदेश पहुँच जाता था। इसी जल सत्याग्रह के सूचना मिलने पर सुखदेव पातर, इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार एवं अन्य साथियों के साथ पैदल चलकर धमतरी के कंडेल सत्याग्रह में शामिल होने पहुँचे और गाँधी जी से मिले और राष्ट्रीय आंदोलन से बहुत प्रभावित हुए तथा वापस जाकर अपने क्षेत्र की जनता को महात्मा गाँधी जी के आंदोलनों से जुड़े उनके विचारों, बातों का प्रचार–प्रसार करते थे। गाँधी जी के मौखिक संचार से ग्रामीणों को इकट्ठे किया जाना कोई भाग्य से कम नहीं।

दूसरी बार 1933 में महात्मा गाँधी का आगमन

1933 में दुर्ग और रायपुर में आये। इस दौरान वे तिलक कोष और स्वराज कोष लिए आये थे। इस दौरान भी सुखदेव पातर, इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार महात्मा गाँधीजी से मिलने के लिए दुर्ग पहुँचे और उनके सभा में उपस्थित हुए। वे तिलक कोष और स्वराज कोष के लिए दान किये। इसके बाद से आंदोलन का प्रभाव भानुप्रतापपुर, दुर्गूकोंदल, कोड़ेकुर्से के बाजार हॉट एवं आसपास के क्षेत्र में अधिक हुआ।

स्वराज्य आंदोलन

पुलिस थाना दुर्गूकोंदल और भुनप्रतापपुर के व्ही.सी.एन.बी. (विलेज क्राईमनोट बुक) के अनुसार ग्राम चेमल के विलेज क्राईम नोटबुक तारीख 7.12.1941 में लिखा गया है कि ''इस मौजे में आजकल स्वराजी हरकत की गड़बड़ शुरू हुआ है। इंदरू केंवट के बहकावे में आकर लोग स्वराज आंदोलन में सम्मिलित हो रहे हैं। वे मानपुर (राजनांदगांव) से स्वराजी झण्डा खरीदकर लाये हैं और अपने–अपने घरों में रखे हैं।'' इंदरू केंवट ने स्वराज आंदोलन में शामिल होने के लिए खूब प्रचार–प्रसार किया तथा इस दौरान क्षेत्र की जनता को स्वराज आंदोलन के प्रति सूचित, जागृत कर महात्मा गाँधी जी के आंदोलन को तेज और बढ़ाने के लिए लोगों को सूचना और जानकारी सम्प्रेषित किया। इस क्षेत्र में जनता इंदरू केंवट के बातों एवं विचारों से प्रभावित हुए और स्वराज आंदोलन करने व्यापक जनसहयोग मिला। ढोल, बांजे के साथ वे लगातार प्रचार करते थे।

स्वराजी झण्डे का जुलूस

स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सम्प्रेषण के विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रचार प्रसार किया गया, इस संदेश का इतना व्यापक असर पड़ा कि भानुप्रतापपुर बाजार में 05.04.42 को स्वराजी झण्डे का जुलूस निकला गया। इस समय भानुप्रतापपुर डाक बंगले में जुनियर साहब बहादुर का मुकाम था। इस जुलूस का नेतृत्व कंगलू कुम्हार, सुखदेव हल्बा, दारसू गोंड़ ने किया। भानुप्रतापुर बाजार में स्वराजी झण्डों के साथ लोग इकट्ठे हुए और जुलूस निकाला गया। जुनियर साहब बहादुर ने इन क्रांतिकारियों को समझाने की कोशिश की पर वे नहीं माने और स्वराजी झण्डों को ऊँचाकर आगे चलते गए। विलेज क्राईम नोटबुक में दिनांक 11.04.1942 को लिखा गया है कि खण्डी घाट में बैठक हुआ था। इस बैठक में कंगलू और सुखदेव पातर (हल्बा) ने लड़ाई में कोई चंदा, बरार, मदद नहीं करने के लिए कहा था। इसकी रिर्पोट होने पर जुनियर साहब बहादुर ने कंगलू और सुखदेव पातर (हल्बा) पर भारत रक्षा कानून रूल नम्बर 38 के तहत मुकदमा दायर किया तथा चालान की कार्यवाही की गई। कंगलू और सुखदेव पातर (हल्बा) पर दिनांक 17.04.42 को लिखा गया है कि कंगलू और सुखदेव पातर (हल्बा) को दोनों मुलजिमों को 25–25 रूपये जुर्माने की सजा हुई। इसके अलावा ग्राम भेलवापानी के विलेज क्राईम नोटबुक में दिनांक 25.04.42 में सुखदेव हल्बा और कंगलू कुम्हार साकिन चेमल को अदालत जु. जा. काँकेर से 25–25 रूपये जुर्माने की सजा हुई तथा

अदम अदाय जुर्माने के 4 माह सख्त कैद (17.04.42)। इस समय में दुर्गूकोंदल, कोड़ेकुर्से, बरहेली, तरहूल में भी स्वराजी झण्डों के साथ जुलूस निकाले। लोगों को स्वराज आंदोलन के प्रति जागरूक किया तथा इस अवसर पर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार का प्रचार–प्रसार कर लोगों को स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।

चंदा, बरार या किसी तरह की मदद नहीं देने किया जनसंचार–खण्डीघाट में कंगलू कुम्हार के नेतृत्व में एक बड़ा बैठक हुआ। समूह को सूचनाएँ सम्प्रेषित करने के लिए आयोजित इस बैठक के मुखिया सुखदेव पातर (हल्बा) भेलवापानी, कंगलू कुम्हार ग्राम–चमेल, इंदरू केंवट ग्राम–सुरूंगदोह, सहंगू गोंड ग्राम–पालवी, थे। ग्राम चेमल के विलेज क्राईम नोटबुक के अनुसार 22.03.42 को खण्डी घाट में कंगलू कुम्हार ने लगभग 200–300 स्वराजी झण्डी वालों का बैठक किया। इस बैठक में 30–32 स्वराजी झण्डे वाले भी थे। इस बैठक में सुखदेव पातर ने अपने भाषण में लड़ाई के काम में अंग्रेज सरकार को कोई चंदा, बरार तथा किसी प्रकार की मदद नहीं करने की अपील की। इसके पश्चात् वे गाँव–गाँव जाकर लोगों को लड़ाई में कोई चंदा, बरार या किसी तरह की मदद नहीं करने का जोर–शोर से प्रचार–प्रसार किये।

भू–राजस्व (लगान) न देने का किया प्रचार प्रसार

सुखदेव पातर, इन्दरू केंवट, कंगलू कुम्हार के नेतृत्व में सन् 1944–45 में काँकेर रियासत के दीवान टी. महापात्र द्वारा भू–राजस्व (लगान) में वृद्धि किया गया। इन्होंने भू–राजस्व (लगान) में वृद्धि के विरोध में आंदोलन किया। इस दौरान क्षेत्र के आदिवासियों में सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और उनके अन्य साथियों ने बढ़ी हुई भूराजस्व नहीं देने का प्रचार–प्रसार किया। आदिवासियों में प्रचार–प्रसार का व्यापक असर पड़ा। आदिवासियों ने सुखदेव पातर (हल्बा) इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और उनके अन्य साथियों के कहने पर बढ़ी हुई भू–राजस्व (लगान) पटाने से मना कर दिये। ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध कार्य करने एवं लगान नहीं पटाने के परिणाम स्वरूप सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और उनके अन्य साथियों तथा 429 आदिवासियों पर राजद्रोह का मुकदमा चलया गया। यह आंदोलन व्यापक रूप ले रहा था। इसको देखते हुए इस रियासत के प्रमुख महाराजाधिराज भानुप्रतापदेव को भू–राजस्व आंदोलन में हस्तक्षेप करना पड़ा और आंदोलनकारियों से समझौता करना पड़ा। आंदोलनकारियों से समझौता के बाद महाराजाधिराज भानुप्रतापदेव ने आंदोलनकारियों पर चल रहे राजद्रोह के मुकदमों को वापस ले लिया। सम्प्रेषण के व्यापक प्रयोग से यह संभव हुआ।

आंदोलन के दौरान ही सुखदेव पातर (हल्बा) राऊरवाही से भेलवापानी और कंगलू कुम्हार चेमल से गोटुलमुण्डा में बस गये। सुखदेव पातर (हल्बा) शिकार करने का शौकीन था। अक्सर सोनादाई के पहाड़ियों की ओर शिकार करने के लिए जाते थे। इस दौरान उन्हें भेलवापानी का आसपास का वातावरण राष्ट्रीय आंदोलन के अनुकूल लगा और अंततः वे भेलवापानी में बस गये। कंगलू कुम्हार जमीदारी जमीन गोटुलमुण्डा में खरीद लिये। इस कारण से कंगलू कुम्हार चेमल से गोटुलमुण्डा में आकर रहने लगे और यही से वे राष्ट्रीय आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

15 अगस्त 1947 के दिन

रेडियो के माध्यम से स्वतंत्रता की घोषणा हुई, तत्पश्चात् सुखदेव पातर (हल्बा) सबसे पहले अपने गाँव भेलवापानी में तिरंगा झण्डा फहराया। इंदरू केंवट अपने गाँव सुरूंगदोह और कंगलू कुम्हार गोटुलमुण्डा में तिरंगा झण्डा फहराये। वे तीनों सागौन वृक्ष को काटकर झण्डा फहराने के लिए खम्भा बनाये और इसी सागौन खम्भे में सबसे पहले तिरंगा फहराये। इस दिन से प्रतिवर्ष इसी जगह और खम्भा में झण्डा फहराया जा रहा है। गोटुलमुण्डा का सागौन लकड़ी का बना खम्भा अभी भी सुरक्षित रखा गया है।

सभा, बैठक, रैली और जुलूस तथा भाषण को बनाया सम्प्रेषण का माध्यम

स्वराज्य, चरखा युक्त तिरंगा झण्डा लेकर भानुप्रतापपुर, दुर्गूकोंदल, कोड़ेकुर्से के बाजार हॉट और गाँव–गाँव

में रैली, जुलूस निकाली गई। रैली, जुलूस के द्वारा इस क्षेत्र के आम जनता को सूचना सम्प्रेषण और जागृत करने का कार्य करते थे। इस समय रैली, जुलूस ही संचार का सबसे बड़ा माध्यम था। इस क्षेत्र में रैली और जुलूस का व्यापक प्रभाव पड़ा। बरहेली, तरहूल गाँव में भी रैली और जुलूस निकाला गया। सभा, रैली और जुलूस तथा भाषण के माध्यम से महात्मा गाँधी के राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में लोगों को आसानी से बताया जाता था। स्वराज्य झण्डा लेकर वे गाँव–गाँव में महात्मा गाँधी के विचारों और बातों को बताते थे। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का प्रचार–प्रसार सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और उनके अन्य साथियों ने सभा, रैली, जुलूस और भाषण देकर किया।

सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार सभा, बैठक, रैली और जुलूस तथा भाषण आदि संचार माध्यमों का बखूबी उपयोग करते थे। राष्ट्रीय आंदोलन के क्रांतिकारियो ने अपने–अपने क्षेत्र में भारत की आजादी के लिए सूचनाएं सम्प्रेषित करते थे और लोगों को आंदोलनों में शामिल होने के लिए जागरूक और प्रेरित करते थे। इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार को स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा प्राप्त हुआ, लेकिन सुखदेव पातर (हल्बा) भी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में लोगों के दिलों दिमाग में बने हुए। महात्मा गाँधी जी के राष्ट्रीय आंदोलन में गुमनाम क्रांतिकारियों को स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा राष्ट्रीय आंदोलन के सरकारी दस्तावेज के आधार पर सरकार को देना चाहिए। जो तकनीकी त्रुटि के कारण नहीं मिल पाया है। सुखदेव पातर (हल्बा) को मौखिक रूप से स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा मिला हुआ। आज भी ग्रामीण इन्हे सेनानी मानते है। सुखदेव पातर (हल्बा) को स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देकर उनके परिवार तथा इस क्षेत्र की जनता को न्याय दिया जा सकता है। सुखदेव पातर (हल्बा) पातर बगीचा राऊरवाही और खण्डीघाट के राजादाब में अपने साथियों के साथ जनसभाएं लेकर राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सूचनाएं सम्प्रेषित कर लोगों को जागृत करते थे।

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी जी के राष्ट्रीय आंदोलन में संचार माध्यम, संचार प्रक्रिया का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। गाँजी जी के अनुयायियों ने सम्प्रेषण माध्यमों का भरपूर उपयोग किया। बगैर सम्प्रेषण के गाँधी जी के विचारों एवं बातों का प्रचार–प्रसार करना सम्भव नहीं था। सम्प्रेषण के माध्यम से गाँधी के राष्ट्रीय आंदोलन सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वराज्य आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार इत्यादि के समाचारों को आम जनता तक पहुँचना संभव हुआ। संचार साधनों के माध्यम से देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में सूचना सम्प्रेषित कर राष्ट्रीय चेतना जागृत करते थे। महात्मा गाँधी जी के समाचारपत्रों में सम्प्रेषण का मूलाधार राष्ट्रीयता थी। गाँधी जी के अखबारों में सत्य, अहिंसा, प्रेम और समरसता का संचार होता था। यंग इंडिया, हरिजन अखबारों के माध्यम से देश के लोगों को राष्ट्रीय एकता जागृत करने के लिए समाचार सम्प्रेषित की जाती थी।

इस क्षेत्र में सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार और उनके अन्य साथियों ने सभा, बैठक, रैली, जुलूस और भाषण जैसे संचार माध्यमों के द्वारा सूचना सम्प्रेषण कर जन जागरूकता कार्य करते रहे और सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वराज्य आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार इत्यादि आंदोलनों में शामिल होने लोगों को जागृत करते थे। इस क्षेत्र में सुखदेव पातर (हल्बा) इंदरू केंवट, कंगलू कुम्हार के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के दमनकारी नीतियों, अन्याय, शोषण के खिलाफ आंदोलन किया गया तथा इन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरोध में गाँव–गाँव जाकर सूचना सम्प्रेषित किये और लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जागृत एवं प्रेरित किया तथा क्षेत्र की जनता और सुखदेव पातर (हल्बा), इंदरू केवट, कंगलू कुम्हार मिलकर राष्ट्रीय आंदोलनों को सफल बनाये।

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ. (2014), *सामाजिक शोध व सांख्यिकी,* विवेक प्रकाशन,दिल्ली, 206–226।
2. उपाध्याय, विजय शंकर, शर्मा, विजय प्रकाश, (2007), *भारत की जनजातीय संस्कृति,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,1–20।
3. Mishra, prof. Sambit Sumar & Ali, Dr. Shahid. (2009), *Sampling, Research Methodology in management and communication*. m/s University Book house (pvt.) Ltd, Neha graphic & Mehra offset press, New Delhi,119.139
4. सिंह, ओम प्रकाश, (2002), *संचार के मूल सिद्धांत,* क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1–37।
5. प्रसाद, गोविन्द, पाण्डेय, अनुपम, (2006), *समाचार एवं जनसंचार,* डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नईदिल्ली।
6. हसनैन, नदीम, (2004), *भारत में जनजातियां : वर्गीकरण, जनजातीय भारत,* रवि मजूमदार जवाहर पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृष्ट 10–32।
7. एलविन, वेरियर, (2008), *जनजातीय मिथक,* राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. मीणा, रामलखन, (2012), *जनसंचारिकी : सिद्वांत एवं अनुप्रयोग,* कल्पना प्रकाशन, दिल्ली।
9. विलेज क्राईम नोटबुक ग्राम–चेमल।
10. विलेज क्राईम नोटबुक ग्राम–भेलवापानी।
11. नैवेद्य, (2008), बस्तरबन्धु, 20–25।
12. श्री रतिराम पाडे (चक्रधारी) स्वतंत्रता सेनानी कंगलू कुम्हार जी के नाती का साक्षात्कार।
13. श्री डालसिंह पात्र भेलवापानी स्व. सुखदेव पातर (हल्बा) जी के नाती का साक्षात्कार।
14. श्री ललित नरेटी जिलासंयोजक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्मषति समिति जिला कांकेर (छ.ग.) का साक्षात्कार।

****